

उत्तर प्रदेश राज्य में बाजरा उत्पादन और इसका महत्व

कृषि कुंभ (जून, 2023),
खण्ड 03 भाग 01, पृष्ठ संख्या 25-26



उत्तर प्रदेश राज्य में बाजरा उत्पादन और इसका महत्व

अंजू शुक्ला, देवेश यादव एवं रवि कुमार
शोधार्थी छात्र,

चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कानपुर (उत्तर प्रदेश) 208002, भारत।

Email Id: shukla32111@gmail.com

परिचय

बाजरा अत्यधिक चर छोटे बीज वाली घासों का एक समूह है, जो व्यापक रूप से चारा और मानव भोजन के लिए अनाज फसलों या अनाज के रूप में दुनिया भर में उगाया जाता है। गेहूं, धान और गन्ने के बाद बाजरा उत्तर प्रदेश की चौथी प्रमुख फसल है। खाद्यान्न एवं चारे के रूप में प्रयुक्त होने के नाते यह बहुपयोगी भी है। पोषक तत्वों के लिहाज से इसकी अन्य किसी अनाज से तुलना ही नहीं है, इसलिए इसे चमत्कारिक अनाज, न्यूट्रिया मिलेट्स, न्यूट्रिया सीरियल्स भी कहा जाता है।

देश के उत्पादन का करीब 20% बाजरा उत्तर प्रदेश में होता है। उत्तर प्रदेश का प्रति हेक्टेयर प्रति किग्रा उत्पादन राष्ट्रीय औसत (1195) की तुलना में 1917 किग्रा है। 2018 में भारत द्वारा मिलेट वर्ष मनाने के बाद बाजरा सहित अन्य मोटे अनाजों की खूबियों से किसान व अन्य लोग भी जागरूक हुए हैं। नतीजतन बाजरे के प्रति हेक्टेयर उपज, कुल उत्पादन और फसल आच्छादन के क्षेत्र (रकबे) में लगातार वृद्धि हुई। मोटे अनाज की अहमियत को देखते हुए मोदी सरकार के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र संघ 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मोटे अनाज का वर्ष घोषित किया है। केंद्र की इस महात्वाकांक्षी योजना को उत्तर प्रदेश अपने प्रयासों से सफलता के शिखर की

ओर ले जा रहा है। अन्तरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष (2023) के मद्देनजर योगी सरकार ने इस बाबत विभागवार रणनीति तैयार की है। इस पूरी कार्ययोजना का नाम है, “मिलेट्स पुनरोद्धार योजना”।

बाजरे की मिट्टी और जलवायु संबंधी आवश्यकताएं

इसकी खेती हर तरह की भूमि में संभव है। न्यूनतम पानी की जरूरत, 50 डिग्री सेल्सियस तापमान पर भी परागण, मात्र 60 महीने में तैयार होना और लंबे समय तक भंडारण योग्य होना इसकी अन्य खूबियां हैं। चूंकि इसके दाने छोटे एवं कठोर होते हैं, ऐसे में उचित भंडारण से यह दो साल या इससे अधिक समय तक सुरक्षित रह सकता है।

इसकी खेती में उर्वरक बहुत कम मात्रा में लगता है। साथ ही भंडारण में भी किसी रसायन की जरूरत नहीं पड़ती। लिहाजा यह लगभग बिना लागत वाली खेती है। बाजरा की फसल की बुआई 25 सें.मी. की दूरी में पंक्तियों में तथा सीडड्रिल से 1.5-2 सें.मी. दूरी पर करनी चाहिए। इसके लिए 8-10 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज पर्याप्त है। बीज को बुवाई से पहले एग्रेसान जीएन अथवा थीरम (3 ग्राम / किग्रा बीज) से उपचारित करना चाहिए। उत्तर प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों में गर्मियों में बुवाई के लिए मार्च से मध्य अप्रैल जबकि

जुलाई का पहला पखवाड़ा खरीफ की फसल के लिए उपयुक्त है।

पोषण संरचन

बाजरा पोषक तत्वों का खजाना है। बाजरे में गेहूं और चावल की तुलना में 3 से 5 गुना पोषक तत्व होते हैं। इसमें ज्यादा खनिज, विटामिन, खाने के लिए रेशे और अन्य पोषक तत्व मिलते हैं। लसलसापन नहीं होता। इससे अम्ल नहीं बन पाता। लिहाजा सुपाच्य होता है। इसमें उपलब्ध ग्लूकोज धीरे-धीरे निकलता है। लिहाजा यह मधुमेह (डायबिटीज) पीड़ितों के लिए भी मुफीद है। बाजरे में लोहा, कैल्शियम, जस्ता, मैग्निशियम और पोटेशियम जैसे तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं।

साथ ही काफी मात्रा में जरूरी फाइबर (रेशा) मिलता है। इसमें कैरोटिन, नियासिन, विटामिन बी6 और फोलिक एसिड आदि विटामिन मिलते हैं। इसमें उपलब्ध लेसीथीन शरीर के स्नायुतंत्र को मजबूत बनाता है। यही नहीं बाजरे में पोलिफेनोल्स, टेनिन्स, फाइटोस्टेरोल्स तथा एंटीऑक्सिडेंट्स प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यही वजह है कि सरकार ने इसे न्यूट्री सीरियल्स घटक की फसलों में शामिल किया है। अपने पोषण संबंधित इन खूबियों की वजह से बाजरा कुपोषण के खिलाफ जंग में एक प्रभावी हथियार साबित हो सकता है।

बाजरे का पर्यावरणीय महत्व

बाजरे की फसल पर्यावरण के लिए भी उपयोगी है। यह जलवायु परिवर्तन के असर को कम करती है। धान की फसल जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील है। पानी में डूबी धान की खड़ी फसल में जमीन से ग्रीन हाउस

गैस निकलती है। गेहूं तापीय संवेदनशील फसल है। तापमान की वृद्धि का इस पर बुरा असर पड़ता है। क्लाइमेट चेंज के कारण धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में एक समय ऐसा भी आ सकता है, जब गेहूं की खेती संभव ही न हो। उस समय बाजरा ही उसका सबसे प्रभावी विकल्प हो सकता है, इसलिए इसकी खेती को भविष्य की भी खेती कहते हैं। बाजरे की खेती में उर्वरकों की जरूरत नहीं पड़ती। इसकी फसल में कीड़े-मकोड़े नहीं लगते।

अधिकांश बाजरे की किस्में भंडारण में आसान हैं। साथ ही इसके भंडारण के लिए कीटनाशकों की जरूरत नहीं पड़ती। इसी तरह नाम मात्र का पानी लगाने से सिंचाई में लगाने वाले श्रम एवं संसाधन की भी बचत होती है। बढ़ते शहरीकरण एवं औद्योगिकीकरण, बढ़ती आबादी की आवासीय जरूरतों, सड़क, बांध, एयरपोर्ट आदि के लिए जमीन की जरूरत पड़नी ही है। लिहाजा जमीन का रकबा लगातार घटना है। ऊपर से मौसम की अप्रत्याशिता।

आने वाले समय में खाद्यान्न एवं पोषण सुरक्षा के साथ क्लाइमेट चेंज के प्रति संवेदनशील धान एवं गेहूं जैसी परंपरागत फसलों के लिए भी गंभीर चैलेंज है। समाधान, कम लागत, कम पानी में होने वाले बाजरे जैसे मोटे अनाज ही हैं।

बाजरा में वैल्यू एडिशन का दायरा

बाजरे से चपातियां, ब्रेड, लड्डू, पास्ता, बिस्कुट, प्रोबायोटिक पेय पदार्थ बनाए जाते हैं। छिलका उतारने के बाद इसका प्रयोग चावल की तरह किया जा सकता है। इसके आटे को बेसन में मिलाकर इडली, डोसा, उत्पम, नूडल्स आदि बनाया जा सकता है।